

कथा झरना

कहानियों का एक झरना जो आपकी तरफ बहता, गुनगुनाता चला आ रहा है। कथा झरना, सौ कहानियों का संकलन, कहानियों की असीम दुनिया को बच्चों तक पहुँचाने का एक प्रयास है।

कथा झरना की विशेषतायें:

- बच्चों की दुनिया को ध्यान में रखते हुए, कथा झरना में सरल भाषा में लिखी गई कहानियाँ और दिलचस्प पहेलियाँ हैं।
- हर कहानी अलग-अलग कार्ड में छपी है, ताकि बच्चे स्वयं उसे उठाकर टटोलें, पढ़ें, उसका आनंद लें और छोटे-छोटे समूहों में अपने विचार बांटें।
- हर कहानी बच्चों के लिए बड़े अक्षरों व रंगीन चित्रों के साथ प्रस्तुत की गई है।
- हर वर्ग के बच्चों को कम दाम में श्रेष्ठ पठन सामग्री उपलब्ध कराने का यह एक छोटा सा प्रयास है।
- भारत में कहानियों का सर्वश्रेष्ठ भंडार है और यहाँ कहानी सुनाने के कई अद्भुत तरीके सदियों से चले आ रहे हैं। यह संकलन बच्चों को अपने देश की इस परंपरा से अवगत कराने की एक कोशिश है।
- इसमें अनेक प्रकार की कहानियाँ शामिल हैं, जैसे हास्यप्रद, पौराणिक और लोक कथाएँ।

कथा झरना क्यों बनाया?

- ग्रामीण स्कूलों में आधिकांश बच्चे उस नई पीढ़ी के हैं जो पहली बार शिक्षा-प्रणाली से जुड़े हैं। उनके पास स्कूल व घर में पाठ्यपुस्तकों के अलावा अन्य किताबें उपलब्ध नहीं होती हैं।
- बच्चों की सीखने की क्षमता तभी बढ़ती है जब उन्हें तरह-तरह की किताबें पढ़ने का अवसर मिले। कहानियाँ पढ़ने से न केवल भाषा का विकास होता है बल्कि कहानियाँ पूरी दुनिया को देखने का झरोखा बन जाती हैं।
- बिना संदर्भ के शब्द और अक्षरों को पढ़कर बच्चे ऊब जाते हैं। जब सीखना-सिखाना सहज व स्वाभाविक संदर्भ में हो तो वे आसानी से समझते व सीखते हैं।

- कहानियाँ बच्चों की भावनाओं को छू जाती हैं और उनकी कल्पनाशक्ति और अभिव्यक्ति को बढ़ावा देती हैं।
- कहानियों को पढ़ते समय बच्चे सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। पात्रों और घटनाओं को अपने जीवन से जोड़ने लगते हैं। बच्चे अपने अनुभव के अनुसार उसकी अलग-अलग व्याख्या करते हैं।
- कथा झरना और अन्य किताबों को पढ़ने के लिए हर कक्षा में किसी एक जगह को निर्धारित किया जा सकता है। बच्चों में किताबें पढ़ने की आदत मज़बूत करने से पाठ्यक्रम को सीखना-समझना भी सरल हो जाता है।
- कथा झरना को प्रकाशित करने का कारण यह भी है कि शिक्षकों को एक साधन मिले जिसका प्रयोग करके वे बच्चों को सोचने, समझने और अन्य कई कौशल विकसित करने में मदद कर सकें।

कथा झरना की टीम

‘कथा झरना’ का सर्वप्रथम सृजन तमिल भाषा में चार शिक्षा विशेषज्ञों ने मिलकर किया: सुश्री पी. सरस्वती, सुश्री वी. विजयकांती, सुश्री एल. एस. सरस्वती तथा सुश्री एस. राजलक्ष्मी। उन्होंने विभिन्न स्त्रोतों से हजारों कहानियाँ एकत्रित करके उनकी समीक्षा और विश्लेषण किया। बाल मानसिकता को ध्यान में रखते हुए कुछ कहानियों को उन्होंने पुनः रचित किया। टीम ने बच्चों के भीतर समाये हुए कई गुणों, जैसे कि करुणा, दोस्ती, त्याग, सच्चाई, कल्पनाशक्ति आदि पर ध्यान दिया और उन्हें उभारने के उद्देश्य से भी कहानियों को चुना। कहानी के साथ-साथ टीम ने चित्रों पर भी विशेष ध्यान दिया, क्योंकि चित्र बच्चों की जिज्ञासा और कल्पनाशक्ति को बढ़ावा देने में सहायक होते हैं।

2003 में Chatnath Trust, Chennai के सहयोग से ‘कथई अरुवि’ शीर्षक के अंतर्गत तमिल कथा-कार्ड संग्रह प्रकाशित किया गया। Chatnath Trust के निरंतर समर्थन के लिए हम उनके विशेष रूप से आभारी हैं।

कथा-कार्ड संग्रह की परिकल्पना मौलिक रूप से तमिल भाषा में पढ़ने वाले बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए की गई, लेकिन भाषा और संस्कृति की सीमाएँ पार करके यह देश के विभिन्न कोनों में लोकप्रिय हुआ। कथा-कार्ड संग्रह को कई शैक्षिक संस्थाओं ने भी सराहा।

हिन्दी कथा-कार्ड 'कथा झरना' (2008)

नई दिल्ली की संस्था 'Room to Read' ने 'कथई अरुवी' कथा-कार्ड संग्रह को हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने की मांग की और इसी के साथ कथा झरना के प्रकाशन का काम टीम ने आरंभ किया। अनुवाद की प्रारंभिक प्रक्रिया चेन्नई में संपन्न हुई। उसके पश्चात् टीम ने उत्तर भारत के शिक्षाविदों के सहयोग से कहानियों व पहेलियों का हिन्दी पाठकों के अनुसार रूपांतर किया। 'कथा झरना' शीर्षक कथा-कार्ड संग्रह 2008 में प्रकाशित हुआ। निम्न लिखित शिक्षाविदों की टीम के सहयोग व बहुमूल्य सुझावों के बिना कथा झरना का रूपांतरण संभव नहीं हो पाता:

अनुराधा बजाज, पूनम अरोड़ा, इन्दिरा पंचोली, जस्मिता हेमंत, महबूब निशा (दिल्ली)
गीता शर्मा (अहमदाबाद), सी. मणिकंडन, जे. पद्मप्रिया, कनुप्रिया केयाल (चेन्नई)
सुष्मिता बैनर्जी, लोहित जोशी, हितेंद्र उपाध्याय (जयपुर)
टाइपिंग - सुनील कुमार

कहानियों को बच्चों के विकास के लिए इस्तेमाल करने के लिए कुछ सुझावः

(क) कहानियों को समझना

क्रम में लगाना: बच्चों को कहानी की घटनाओं को सही क्रम में प्रस्तुत करने के लिए कहें।

कहानी के मुख्य बिंदु: बच्चों को कहानी सुनाने के बाद पूछें कि कहानी का मुख्य विषय क्या है? उन्हें कहानी की पूरी तस्वीर समझने में मदद करें। अपनी सोच को लिखित रूप में व्यक्त करने के लिए कहें।

अनुमान लगाना: कहानी पढ़ते समय बच्चों को अनुमान लगाने दें कि आगे क्या होने वाला है।

तुलना करना: बच्चे कहानी के पात्रों व स्थितियों में समानताओं और विभिन्नताओं को पहचानने की कोशिश करें।

काल्पनिक, वास्तविक: बच्चों से प्रश्न पूछकर देखें कि वे कल्पना और वास्तविकता के बीच अंतर कर पा रहे हैं या नहीं, जैसे-तुम क्या सोचते हो? क्या ऐसा असली जीवन में हो सकता है?

कहानी को दोहराना: बच्चों को अपने तरीके से कहानी को सुनाने को कहें। अपनी भाषा या शैली में अभिव्यक्त करने का मौका दें।

व्यक्तिगत राय: बच्चों को कहानी के हर पहलू के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करें। प्रश्नों द्वारा उन्हें प्रोत्साहित करें, जैसे-कौन सा पात्र तुमको पसंद आया और क्यों? यदि तुम वह पात्र होते तो क्या करते? यह ज़रूरी है कि शिक्षक बच्चों को कहानी का संदेश पहले से ही न बताएँ। उन्हें स्वयं उसका सार खोजने दें।

(ख) रचनात्मक अभिव्यक्ति

- एक बच्चा कहानी का एक पात्र बने और अन्य बच्चे उससे सवाल पूछकर काल्पनिक संवाद करें।
- कहानी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करें।
- बच्चे अपनी-अपनी कल्पना के अनुसार कहानी पर आधारित चित्र बनाएँ।
- बच्चे कहानी के अंत में अपनी कल्पना के अनुसार बदलाव करें। कहानी को नया नाम दें।
- बच्चों को कहानी पर आधारित रचनात्मक कार्य करवाएँ जैसे मुखौटे, कठपुतली, मॉडल बनाना।
- बच्चों से नई कहानी की रचना करवाएँ। एक बच्चा एक वाक्य बोले। दूसरा बच्चा उससे जुड़ता हुआ दूसरा वाक्य बोले। ऐसे ही पूरा समूह वाक्य जोड़ते हुए एक नई कहानी बनाए।
- तीन या चार शब्द-कार्ड या चित्र-कार्ड जोड़ते हुए बच्चों से एक कहानी बुनने को कहें।
- बच्चों को समूहों में बाँटें। एक समूह से पहेली कहलवाएँ और दूसरा समूह उसका जवाब दे। बच्चों को वस्तुओं, जानवरों व पक्षियों के चित्र या शब्द-कार्ड दें और उन्हें नई पहेलियाँ बनाने को उत्साहित करें।
- बच्चों को एक पत्रिका निकालने में मदद करें, जिसमें उनके द्वारा रचित कहानियाँ, कविताएँ, चुटकुले, पहेलियाँ आदि हों।
- बच्चों द्वारा रची गई कहानियों, पहेलियों, चित्रों व अन्य सामग्री को कक्षा में प्रदर्शित करें अथवा उनके अलग-अलग संकलन बनाएँ।
- गणित, सामाजिक विज्ञान, विज्ञान आदि पढ़ाते समय संबंधित पाठों से जुड़ी कहानियों से परिचित कराएँ।



PUBLISHER

RAJALAKSHMI SRINIVASAN MEMORIAL FOUNDATION (R S M F)

No.6 (1st Floor), 21st Cross Street, Indira Nagar (Near Water Tank),

Adyar, Chennai - 600 020, Phone No: 044 - 2442 1113

Email : rsmf1944@gmail.com || Website: www.rajifoundation.org.in

R S M F, प्रोफेसर राजलक्ष्मी श्रीनिवासन (राजी) की बच्चों के प्रति आजीवन रुचि तथा उत्साह को बरकरार रखने के लिए गठित किया गया। यह संस्था, वंचित वर्ग के बच्चों, विशेषकर बालिकाओं के लिए अनेक शैक्षणिक गतिविधियों को क्रियान्वित करती है। कथा झरना संग्रह के इस संकलन का प्रकाशन गैर-लाभकारी तथा शैक्षिक उद्देश्यों से किया जा रहा है।